विषय–संस्कृतम् **पूर्णाङ्काः–80**

कक्षा–द्वादशी

आदर्श प्रश्न–पत्रम्

चरणबद्ध मुल्यांकनम् (Stepwise Marking)

प्रश्नाः	**खण्ड–क(वस्तुनिष्ठ–प्रश्न नाः)**	**चरणबद्ध मुल्यांकनम्**
(i)(ख)	यजुर्वेद–संहितायाः	1
(ii)(घ)	वरतन्तुः	1
(iii)(ख)	भवभुतिः	1
(iv)(घ)	कर्म	1
(v)(क)	शुकनासः	1
(vi)(ख)	कियाम्	1
(vii)(क)	चतुरङ्बलम्	1
(viii)(ग)	विद्ययाऽमृतमश्नुते	1
(ix)(ख)	ग्रस् धातुः शानच् प्रत्ययः	1
(x)(क)	कया	1
(xi)(ग)	कस्य	1
(xii)(ख)	धारणा	1
(xiii)(घ)	राजा	1
(xiv)(क)	के	1
(xv)(ख)	रगणः	1
(xiv)(क)	श्लेषः	1

खण्ड–ख(अपठितांश– अवबोधनम्)

प्र02	(क)	एकपदेन उत्तरत–	
	(i)	वेदमन्त्राणां	1
	(ii)	पवित्राः बुद्धिः धर्मभावना	1
	(iii)	संस्कारैः मानवजीवनं सुखमयं भवितुं शक्नोति।	1
	(iv)	अनयोः पदयोः 'सुखमयं' इति विशेषणपदम् अस्ति। –सुखमयं–	1 1/2
	(v)	अनुच्छेदे श्रद्धा पदस्य 'अश्रद्धा' इति विपर्ययः प्रयुक्तः। –अश्रद्धा–	1
प्र03	(i)	कश्मिश्चिदरण्ये।	1
	(ii)	खगाः	1/2
	(iii)	सर्वे जालेन सह मिलित्वा स्वमित्रं मूषकमुपागच्छन्। मूषकमुपागच्छन्।	1 1/2

(iv) 'अकर्तयत्' इति क्रियापदस्य अत्र 'मूषकः' कर्ता। 1

"सः"। अथवा "मूषकः"। 1/2

(v) अल्पाः इत्यस्य विपर्ययः 'बहवः' इति प्रयुक्तः। 1

बहवः। 1/2

(vi) 'आरब्धवन्तः' अस्मिन् पदे प्रथमा विभक्तिः बहुवचनम् 1

प्रथमा विभक्तिः बहुवचनम्। 1/2

(vii) 'कर्तुम्' इति पदे कृ धातुः तुमुन् प्रत्ययः च प्रयुक्तः 1

कृधातुः तुमुन्। 1/2

(viii) अस्य अनुच्छेदस्य उचितं शीर्षकं–'संघे शक्तिः कलौयुगे' 1

'संघे शक्तिः कलौयुगे' 1/2

प्र04 एकवा सांयकाले एकः आहारार्थी जम्बूकः ग्रामं
प्रविष्टः। तत्रत्याः कुक्कुराः जम्बुकदर्शनेन तं प्रत्यधवना 3

सः जम्बूकः अपि प्राणरक्षणाय रत्रकगृहं प्रविष्टः।
तत्रस्थापिते नीलीभाण्डे च पतितः। अनन्तंर नीलवर्ण 5
मनोहरं स्वशरीरं विलोक्य मुदितमनाः शनैः बहिः

निष्क्रान्तः। विचित्रवर्णं तम् अपूर्वसत्वं मन्यमानः
कुक्कुराः अपि भयात् दूरं पलायिताः। 8

प्र05 संस्कृतं हि सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति।
इयं भाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा अस्ति अतएव जनभाषा अपि कथ्यते स्म। 4
अस्मात् एव कारणात् प्रतिशतकं–षष्टिशब्दाः संस्कृतभाषायाः अन्यभाषासु
प्राप्यते। वाल्मीकिमुनिना रामायणं नाम काव्यं संस्कृते एव लिखितम्।
महाभारतमपि संस्कृतकाव्यम् अस्ति। देशस्य एकतायै विश्वस्य शान्त्यै 5
संस्कृतस्य महद् योगदानं भवितुं शक्नोति।
भारतीय संस्कृतिः संस्कृताश्रिताः एव वर्तते। प्राचीन साहित्यं पठितुं संस्कृतस्य
अध्ययनम् आवश्यकम्। संस्कृतस्य व्याकरणं सुव्यवस्थितं वैज्ञानिकं चास्ति। अस्य 8
शब्दरचनाशक्तिः अपि अद्भुता वर्तते।

उत्तरम्–

प्र06 (क) (i) गुरूपदेशः। 1

(ख) (ii) राज्ञाम् उपदेष्टारः विरलाः भवन्ति। 1

(ग) (iii) स्नानम् इति विशेष्यं पदं। 1

(iv) सुखेन इति विलोमपदं 1

या

(v) षष्ठी विभक्ति बहुवचन।

प्र07(क) (i) नीरम। 1

(ख) (ii) मरालस्य मानसं मानसं विना न रमते। 1

(ग) (iii) 'मरालस्य' इति पदम्। 1

(iv) 'नीरज' इति प्रायः प्रयुक्तः। 1

या

(v) 'अस्ति'–लट् लकारः।

प्र08(क) (i) रोहितानाम्। 1

(ख) (ii) वटवः अश्वं लोष्ठैः अभिहनन्तु। 1

(ग) (iii) 'परिवृत्य' इति पदे ल्यप् प्रत्यय प्रयुक्तः। 1

(iv) रोहितानाम् 1

या

(v) एषः रोहितानाम् मध्येचरः अत्र 'एषः' इति सर्वनाम पदं अश्वाय प्रयुक्तम्।

प्र09(क) भावार्थः–परमेश्वर सब जड. चेतन पदार्थों में व्यापक है। वही संसार के सभी पदार्थों का स्वामी है। मनुष्य का कर्तवय है कि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन पदार्थों को व्यागपूर्वक ग्रहण करें। 1.5

इनके उपयोग में लालच न करें। क्योंकि लोभवश पदार्थों का उपयोग करने से प्रकृति का सन्तुलन बिगड़ता है और मनुष्य का अपना शरीर भी रोगी हो जाता है। प्रकृति के संरक्षण में ही अपनी सुरक्षा है। .....1 (1.5+1=2.5)

(ख) भावार्थः– बाल्यकाल में सुख के साधन सुलभ होते हैं। बच्चों का मजा लेने के लिए खिलौने आदि की आवश्यकता नही होती। 1

वे तो साधारण से खेल कूद और हंसी मजाक द्वारा ही सुख प्राप्त कर लेते हैं। सुख प्राप्ति के लिए उन्हे बडे. बहुमूल्य क्रीडा साधनों की आवश्यकता नही होती। ये ब्रह्मचारी अपने बचपन का आनन्द ले रहे हैं। .....1.5 (1+1.5=2.5)

महाकवि कालिदास

प्र010(क) महाकवि कालिदास भारत वर्ष के हि नही समस्त विश्व के कवि माने जाते हैं। ये महाराज विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे। अधिकांश विद्वानों का मानना है कि कालिदास का समय ईसापूर्व प्रथम शताब्दी है। संस्कृत साहित्य में कालिदास की सात रचनाएं प्रामाणिक मानी गई हैं। 1

इसमें दो महाकाव्य 'रघुवंशम', कुमारसम्भव दो खण्डकाव्य मेघदुतम्, ऋतुसंहारम् तथा तीन नाटक मालविकागिनमित्रम, विक्रमोवर्थीयम् तथा अभिज्ञानशाकुन्तलम्। काव्यकला एवं नाट्यकला की दृष्टि से कालिदास का कोई मोल नही है। 1

नवरस वर्णन में भी कालिदास सर्वोपरि है। 'उपमा' अंलकार की सटीकता में वर्णन के कारण ही कालिदास के विषय में 'उपमा कालिदासस्य' कहा गया है। तथा 'दीपशिखा' की उपाधि से अंलकृत किया गया है। यही नही इनकी रचनाओं में वैदर्भी रीति की विशिष्टता, माधुर्यगुण का सतत् प्रवाह तथा सरसता ही इन्हें आजतक सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में प्रतिष्ठित किये हुए हैं। 1

(1+1+1=3)

बालकौतुकम

प्र010(ख) 'बालकौतुकम' यह पाठ 'भवभुतिः' द्वारा रचित 'उत्तररामचरितम्' नाटक से लिया गया है। उत्तररामचरितम के चौथे अंक से यह अंश लिया गया है। महाकवि भवभुति के तीन नाटक हैं। 'मालवीमाधवम्', महाविरचितम तथा उत्तररामचरितम। 1

उत्तररामचरितम महाकवि भवभुति की सर्वोकृष्ट रचना है। इनमें काव्य और नाट्य दोनों का संगम हुआ है। यह नाटक करूण रस से ओत–प्रोत है, इसमें कवि ने करूणा रस से पत्थरों को भी रूला दिया है। श्री राम के त्याग, और वियोग से परिपूर्ण यह नाटक नाट्यकला की चरमोत्कर्ष रचना है। राजा बनने पर श्री राम ने सीता का वन में निर्वासन कर दिया। 0.5

निर्वासिता सीता महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में रह रही है। वही पर उसने दो जुड.वां पुत्रों को जन्म दिया। उनका पालन पोषण भी आश्रम में ही होता है। उन्हे शास्त्रों और शास्त्रों की विधिवत् शिक्षा दी जाती है। 0.5

महर्षि वाल्मीकि द्वारा स्वय रचित रामायण का सस्वर ज्ञान उन्हे सिखाया गया है। इसी मध्य राजा राम का अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा आश्रम में प्रवेश कर जाता है। जिसकी रक्षा स्वय चन्द्रकेतु कर रहे हैं। उस घोड़े को देखकर लव पहचान जात है कि यह अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा है। 0.5

सामान्य अश्व नही है। घोड़े के रक्षक सैनिक द्वारा सबको भयभीत कर रहे हैं। कि यह राम का घोड़ा है, इसे पकडने का साहस मत करना। लव कुमार इस घोषणा को सुनकर उस घोड़े को आश्रम में बांधने का आदेश देते हैं। 0.5

(1+ 0.5+ 0.5+ 0.5+ 0.5 = 3)

<u>वसन्ततिलका</u>

प्र011 लक्षणः– उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।
जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, भगण, जगण एवं दो गुरू वर्ण हो, वह वसन्ततिलका छनद कहलाता है। 1

उदाहरण–

त0	भ	ज	ज	गु0गू0
डड।	ड।।	।ड।	।ड।	डड

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।। 1.5

डड।	ड।।	।ड।	।ड।	डड
त0	भ0	ज0	ज0	गु0गु0

संगति– उपर्युक्त उदाहरण के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, भगण, जगण और दो गुरू वर्ण होने से यह वसन्ततिलका छनद का उचित उदाहरण है। 0.5

(1+ 1.5+ 0.5= 3)

<u>मालिनी</u>

लक्षण– ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।
जिस छनद के प्रत्येक चरण के क्रमशः नगण, नगण, मगण तथा दो यगण हों, वह मालिनी छन्द कहलाता है। 1

उदाहरणः–

न0	न0	म0	य0	य0
।।।	।।।	ऽऽऽ	।ऽऽ	।ऽऽ

मनसि वचासि काये पुण्यपीयुषपूर्ण।
त्रिभुवनमुपकारश्रोणिभिः प्रीण्यन्तः।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम्
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।। 1.5

।।। ।।। ऽऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ

न0 न0 म0 य0 य0

संगति– प्रस्तुत उदाहरण में क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण होने से यह मालिनी छनद का उचित उदाहरण है। 0.5

(1+ 1.5+ 0.5= 3)

प्र012 अनुप्रासः

लक्षण– अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत् अर्थात् स्वर की विषमाता होने पर भी वर्ण या वर्णसमूह की आवृत्ति को अनुप्रास अलंडकार कहते हैं। 1

उदाहरण– हंसो यथा राजतपञ्जरस्थः

सिंहो यथा मन्दरकन्दरस्थः।

वीरो यथा गर्वितकुञ्जरस्थः 1.5

चन्द्रोपिडपि बभ्राज तथाडम्बरस्थः।।

संगति– यहां य, थ, स्थः वर्णों की आवृति हुई है अतः यहां अनुप्रास अलंडकार है। 0.5

रूपकः

लक्षण– तद्रुकमभेदो य उपमानोपमेययोः।

अर्थात् जहां अतिशय समानता के कारण उपमेय का उपमान का रूप दे दिया जाए वहां रूपक अंलकार होता है। 1

उदाहरण– जात! पश्यामि ते मुखपुण्डरीकम्। 1.5

संगति– यहां उपमेय (मुख) को उपमान (कमल) का रूप दे दिया है अतः यहां रूपक अलड्कार है। 0.5